मुखपृष्ठ
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यसुधा
वर्ष: 4, अंक 68, सितम्बर(प्रथम), 2019

रजनी

(भाग-13)

जनकदेव जनक

गतांक से आगे:

पुलिस हेड ऑफिस में नक्सली महिला कमांडेंट सुजाता और बीरू मांझी ने हथियार डाल दिया था.सुजाता पर पांच जवानों की हत्या,डकैती,लूट और अपहरण का मामला दर्ज था. जिस पर सरकार ने दो लाख रुपये का इनाम घोषित किया था. सुजाता अपनी एक माह की बच्ची के साथ अधिकारियों के साथ बैठी हुई थी. जिसमें एसएसपी बीएन वर्मा, एसपी आरएन शर्मा, डीएसपी जीएन सिंह, इंस्पेक्टर रवि,सीआइडी एसपी रमन सेन आदि थे. सरकार की ओर से जीवन यापन के लिए उसे 10 लाख रुपये, एक नौकरी और अन्य सुविधा व सुरक्षा उपलब्ध कराया गया था. सुजाता ने पुलिस को बताया कि उसका गर्भ गिराने के लिए नक्सलियों द्वारा ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों पर चढ़ाया और उतारा जाता. इस दौरान उसे खाने को भर पेट भोजन भी नसीब नहीं होता था. प्रसव पीड़ा के दिन तड़पते हुए छोड़ दिया गया, ताकि जच्चा-बच्चा दोनों मर जाए. लेकिन ईश्वर ने दोनों को बचा लिया. दो वर्ष पूर्व उसने अपने गांव के बीरू मांझी के साथ नक्सली कैंप ज्वाइन किया था. उसे ट्रेनिंग देने के बाद महिला सेना की कमान सौंपी गई थी. उसने बताया कि नक्सली सरगना प्रताप सिंह के इशारे पर उसने कई बरदातों को अंजाम दिया था. कई बार पुलिस पर दमनात्मक हमला भी किया था.जिसका केस कोर्ट में लंबित है.

सुजाता के बयान के बाद एसएसपी बीएन वर्मा ने हर तरह की सुरक्षा व जीवन यापन का आश्वासन दिया. कहा कि सुजाता अब समाज की मुख्य धारा की एक अंग है. उसके बच्चे की परवरिश अन्य बच्चों की तरह किया जाएगा. स्कूल में नाम लिखाने से लेकर अन्य मामलों में किसी तरह की दिक्कात नहीं होगी.

० ० ० ० ० ०

विजय एक तहखाने में कैद था. उसे नहीं मालूम कि रजनी को कहां रखा गया है. उसे इतना याद था कि वह शशि के जन्म दिन पर उसे बधाई देने के लिए उसके बंगला पर जाने वाला था. वह होटल से नीचे उतरा और अपनी बाइक के पास पहुंचा था. वह जैसे ही अपनी बाइक स्टार्ट करनी चाही कि उसके पीछे-पीछे दौड़ती हुई रजनी भी वहां आ गई. बाइक के सामने खड़ा होकर अपने मन की भड़ांस निकाल डाली,

" तुम मुझे छोड़कर कहां जा रहे हो? मेरा इतना भी अधिकार नहीं कि तुम्हारे साथ कहीं घूम फिर सकूं.मैं कोई चिड़ियां घर की जानवर तो हूं नहीं, जो होटल के कमरे में नजरबंद रहूं. क्या तुम मुझसे प्यार नहीं करते? अगर झूठ है तो फिर सच क्या है, बोलो?"

विजय कोई उत्तर नहीं दे सका. वह आग में जलती रजनी को देखता रहा. तभी रजनी फिर बोल पड़ी,

" जवाब दो, मै तुम्हारी हूं कौन?"

रजनी का गुस्सा देखकर विजय को पाला मार गया. जैसे किसी बिच्छू ने डंक मार दिया हो. वह उसके सामने मूर्तिवत खड़ा रह गया. रजनी का सत्य वाक्य उसके कलेजे को बेधता जा रहा था. उसने अपने प्यार को ठुकराते हुए एक बार तड़प उठा. क्या वाकई रजनी उसे प्यार करती है या शशि को? विजय ने व्यंग्यात्मक लहजे में कहा,

" मिस रजनी, आप मुझ पर इतना गुस्सा क्यों उतार रही हैं. आप किसी और की अमानत है."

विजय की बातों से रजनी का होश उड़ गया. उसे यकीन नहीं हो रहा था

कि विजय के मुंह से ऐसे अल्फाज भी निकलेंगे. जबकि वह उसके चरणों की धूल बनने को सोच रही है. विजय को छोड़कर वह किसकी अमानत हो सकती है यह तो वहीं बता सकता है? रजनी का गुस्सा उफान पर आ गया. उसने पूछा,

" विजय, मैं तो यहीं जानती रही हूं कि औरते ही छली और कपटी होती हैं. किसको कैसे बरगलाना है,महिलाएं अपने त्रिया चरित्र का अस्त्र प्रयोग करती है. किंतु तुझे देखकर लगता है कि अब मर्द भी....,आखिर बोलते क्यो नहीं कि मैं किसी अमानत हूं?"

विजय को लग रहा था कि तिरस्कार करने से रजनी शशि के पास चली जाएगी, लेकिन उसके तर्क के आगे वह बौना साबित हो रहा था. आखिर में उसने कहा,

" मिस रजनी, क्या आपका संबंध शशि से नहीं है. उसका सबूत मेरे पास है. खैर, उसे समझाना ठीक नहीं है. भलाई इसी में है कि आप शशि की प्रेयसी बन कर रहें. "

शशि का नाम सुनकर रजनी को एकाएक चक्कर सा आ गया. वह गिरते-गिरते बची. उसने रोते हुए विजय से कहा,

" इम्तहां की हद हो गई विजय, अब मत सताओ...मेरे जिंदगी में तेरे सिवा कोई नहीं है....मैं किसी शशि को नहीं जानती...नहीं जनती...नहीं जानती....मेरे शीतल चितवन को जलाने से क्या फायदा....?" इतना बोलते-बोलते रजनी पसीने से तरबदर हो गई और अचानक बेहोश होकर नीचे गिर पड़ी.

उसी समय टप-टप...,टप-टप....,टप-टप...करते घोड़े पर सवार कुछ नक्सली आ गए, जिन्हें देखते ही दुकानों का शटर धडाधड़ गिरने लगे. मारे भय के लोग इधर उधर भागने लगे. चारों तरफ भागम भाग की स्थिति उत्पन्न हो गई.

विजय कभी रजनी को देखता तो कभी नक्सलियों को. वह समझ नहीं पा रहा था कि क्या करे न करे.तभी नक्सलियों का दल विजय और

रजनी को घेर लिया. बिना समय गंवाए संगीनों की नोक पर दोनों को उठाकर वहां से निकल भागे.

. . . . . .

रजनी और विजय के मिल जाने पर प्रताप सिंह प्रसन्न था. उसने धर्म दास और उसके साथियों की कामयाबी पर शबाशी दी. कहा,

“हम समानांतर सरकार चलाते हैं. हमारी सेना विषम परिस्थितियों में भी अर्ध सैनिक बलों का आक्रमण फतह करने की क्षमता रखती है. लेकिन रजनी एक सरकार की बेटी है. एक ऐसी हस्ती की बेटी है जिसके सामने संसार की सभी भौतिक सुख संसाधन अक्षुण्य है. उसकी खुशी के लिए हम कुछ भी कर सकते है. लेकिन रजनी को यह मालूम नहीं होना चाहिए कि उसका बाप नक्सली सरगना है. वह तो अपने बाप को कोल मार्चेट के रूप में जानती है. यह भेद मरते दम तक नहीं खुलना चाहिए. क्या समझे तुम लोग.”

“ अपनी सौगंध, बात यहीं दफन.” एक साथ सामूहिक स्वर गूंजा.

‘‘ मुझे यहीं उम्मीद थी. सुनो, इंस्पेक्टर रवि हमारे पीछे बाज की तरह लगा हुआ है. वह हमारे साम्राज्य को नेस्ताबूद करने का सपना देख रहा है. लेकिन हम उसे छोड़ेंगे नहीं, उसके पूरे खानदान को जलाकर राख कर देंगे.....”

अचानक प्रताप सिंह बोलते-बोलते चुप हो गया. उसके तमतमाए चेहरे पर आक्रोश झलक रहा था. उसने अपनी नजरें निजी सेना के एक-एक जवान पर डाली. जिसकी तलाश थी. वह उसे नहीं दिखाई पड़ा.यक-ब-यक उसका गुस्सा फट पड़ा और बोला,

“ अगर जग्गू सिंह कल तक मिसेज प्रभा व इंस्पेक्टर को लेकर यहां नहीं आया तो उसे मौत के घात उतार दिया जाएगा.” उसकी आंखें लाल-लाल हो गईं. उसने पुन: गरजते हुए कहा,“ धर्म दास!”

बॉस की दहाड़ सुनकर धर्म दास सहम गया. वह जानता था कि जब-जब बॉस ने गुस्सा किया है तो वह व्यर्थ नहीं गया है! किसी न किसी की

जान पर आफत आई है. वह अपनी परिचित भाषा में नम्रता के साथ कहा,

" हुक्म हो सरकार..."

" विजय को हाजिर करो."

"अभी लाया सरकार."

विजय को हाजिर करने के आदेश पर धर्म दास यकायक तिलमला गया. पता नहीं क्यों विजय से उसे हमदर्दी हो गई थी. वह उसे बचाना चाहता था. लेकिन अपने बॉस के आदेश का उल्लंघन करना अपनी मौत को दावत देने से कम नहीं था. वह अपने चेहरे पर नकाब लगाया और तहखाने के अंदर चला गया.

प्रताप सिंह धर्म दास के आगे बढ़ते ही उसके डगमगाते पग को पढ़ने लगा, जैसे धर्म दास के चेहरे पर उभर आए भावों को देख लिया हो. उसने जोरदार आवाज लगाई-

" राधे!"

" यस, बॉस. " निजी सैनिकों में से एक लंबा-तगड़ा, हृष्ठ-पुष्ट लगभग तीस वर्षीय जवान राधे सैनिकों की कतार से निकल कर सामने आया और अदब के साथ सिर झुकाया.

" कल जग्गू सिंह बंदी के रूप में हमारे सामने खड़ा मिलना चाहिए. अगर नहीं ला सके तो उसकी जगह तुम्हें ही जिंदा चिता में जलना पड़ेगा.

"यस, बॉस."

" तुम अपने तीन साथियों को लेकर मिशन पर निकल जाओ."

" यस बॉस." इतना बोलकर राधे आगे बढ़ गया. उसका इशारा पाते ही सश्स्त्र तीन जवान आ गए और अपने मिशन की ओर बढ़ गए.

धर्म दास विजय को लेकर पहुंचा. उसे देखते ही प्रताप सिंह की आंखें जल उठी, जैसे अपनी बेटी के साथ प्यार का नाटक करने वाले को जला देना चाहता हो. वह गरजा,

" धर्म दास, विजय के बंधनों को खोल दो और उसकी आंखों पर बंधी

पट्टी भी हटा दो, ताकि उसे जंगल में नक्सली राज का पता चल सके.
" जी सरकार."
धर्म दास ने अपने पास खड़े विजय के बंधनों व आंखों की पट्टी को हटाकर एक स्थान पर जाकर खड़ा हो गया. साथ ही नकाबपोश अपने बॉस की गतिविधियों को देखने लगा.
बंधनमुक्त होने पर विजय ने पहले अपनी आंखों को अपनी अंगुलियों से पोछकर साफ किया. उसके बाद अपनी नजरें उठाकर चारों तरफ देखा. अपने को घने जंगल में अपराधियों से घिरा हुआ पाया. समझ नहीं पा रहा था कि उसे कहां रखा गया है और किस अपराध में उसे बंधक बनाया गया है. तभी उसे कड़कदार आवाज सुनाई पड़ी,
" तुम हमारे गिरफ्त में हो, बिना इजाजत तुम इधर-उधर घूम भी नहीं सकते. "
विजय उस आवाज की ओर देखा. कोई नकाबपोश हाथ में कोड़ा लिए उसे घूर रहा था. उसने सोचा, ' पहले तो रजनी का पता लगाना है कि उसे कहां रखा गया है? अगर नहीं मिली तो दमखम दिखाकर मारेगे या मरेंगे. आखिर इस जिल्लत भरी जिंदगी में रखा क्या है! अगर यहां से भागने में सफल हुआ तो सभी को काल कोठरी का रास्ता दिखाकर रहूंगा.' उसने निडरता के साथ पूछा,
" आप लोग कौन है? क्या जान सकता हूं कि मुझे यहां क्यों लाया गया है?"
" देखो, मेरी ओर देखो. सब कुछ समझ जाओगे. आज तक इस मूर्ति के सामने किसी की जुबान नहीं खुली. जिसने जुबान खोलने की कोशिश की, उसकी जुबान सदा के लिए बंद कर दी गई. अरे हां, क्या नाम है तुम्हारा?"
" मैं....मैं... तुम जैसे तुच्छ लोगों को अपना नाम नहीं बताता, जो हमेशा औरतों की तरह अपना मुंह घूंघट में छुपाए फिरता हो..., वो मर्द नहीं औरत है औरत..., जो अपने दागदार चेहरे को दुनिया की नजरों से छुपाए रखता हो." यकायक विजय की आवाज वहां बम की तरह फटी, जिसके

विस्फोटक छींटे पड़ने से नकस्लियों का
सरगना प्रताप सिंह तिलमिला उठा और हंसते हुए अपना नकाब चेहरे से उतार कर फेंक दिया और बोला,
" हा..हा...हा..., लो पहचानों मुझे कौन हूं!"
" प्रताप सिंह.... तुम?" विजय आश्चर्य से बोला," तुम्हीं हो नक्सलियों का प्रमुख ...कोयला व्यवसाय से पेट नहीं भरा तो अब नीचता पर उतर आए हो...,अमीरों से लेवी वसूलना बंद कर.... अब मां बहनों की अस्मत पर हाथ फेरने लगे हो....धिक्कार है तेरी ऐसी घिनौनी हरकतों पर....अपने परिवार की भलाई चाहते हो तो अपने जमात के साथ कानून के हवाले कर दो...सरकार सात खून माफ कर देगी....."
बीच में ही प्रताप सिंह अट्टहास लगाते हुए बोल पड़ा,
" मेमने की तरह मेमियाना सीख गए हो. क्या इतनी जल्दी अपने बाप की मौत भूल गए, जो सरेराह पिटाई खा रहा था और लोग तमाशाबीन बने तमाशा देख रहे थे. वहीं हस्र तेरा भी होगा."
" प्रताप सिंह तुम मेरे बाप का कातिल ही नहीं इस देश के अपराधी हो. तुम्हें न तो समाज माफ करेगा न यह मुल्क. "
" हराम की औलाद, तुम्हें हम जिंदा नहीं छोड़ेंगे. तेरी जुबान कैंची की तरह चलने लगी है उसे बंद नहीं किया तो फिर देखना अपना रूप. तुम्हें गोली नहीं मारूंगा, बोटी-बोटी काटकर कुत्तों के आगे फेंक दूंगा.अगर तू जिंदा बच गया तो देखना एक दिन, इस देश पर मेरी हुकूमत होगी और मेरी सरकार का शासन होगा. तू रजनी से झूठे प्यार का नाटक क्यों रचा रखा है? तेरा मकशद क्या है?" इतना बोलते हुए प्रताप सिंह आगे बढ़ा और हवा में कोड़ा लहराकर विजय के शरीर पर दे मारा,
"...सर्राक...., सर्राक..., सर्राक....." कोड़ों की मार से विजय तड़प उठा और बोला,
" प्रताप सिंह निहत्थे पर वार करना कहां की मर्दाग्नि है. हिम्मत है तो मुझसे एक-एक हाथ अजमा लो...., छठी का दुध याद न करा दिया तो

फिर चाहे जो कहना...., रजनी से प्यार करता हूं नाटक नहीं,राधे-कृष्ण सा सच्चा प्यार. वह मेरी है और मेरी रहेगी."

" झूठा-फरेबी, कृष्ण ने राधा के साथ प्यार का ढोंग रचाया था और शादी रूकमिनी से की थी. राधा को तो उसने अपने आंगन में कदम तक नहीं रखने दिया था. बेचारी ताउम्र कृष्ण के प्यार में तड़पती रही.मेरी बेटी को वही सजा देना चाहता है?"

" रजनी किसी पापी की बेटी नहीं हो सकती, वह जरूर किसी और की बेटी है. "

इतना बोलने के साथ विजय अपने स्थान से जंप किया और सामने खड़े प्रताप सिंह पर जोरदार किक लगाया. चोट खाने के बाद वह नीचे गिर पड़ा. तब तक विजय दौड़ते हुए पानी से भरी खाई में कूद गया.

असावधान प्रताप सिंह विजय के वाक्य युद्ध में फंसा हुआ था. उसे ऐसे वार की आशंका तक नहीं थी.जब तक उसकी सेना और वह खुद संभलता, विजय खाई में कहीं गायब हो गया. उसकी सेना खाई को घेर कर ताबड़तोड़ गोलियां बरसाने लगी, लेकिन किसी तरह की सफलता नहीं मिली.

क्रमश:

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें